# देवघर जिला में अनुसूचित जाति जनसंख्या के आयाम : एक भौगोलिक विश्लेषण

**शोध प्रारूप**

**भूगोल विषय में पीएच0 डी उपाधि के लिए निबंधन हेतु**

**(सामाजिक विज्ञान संकाय)**

**स्नातकोत्तर भूगोल विभाग**
**राँची विश्वविद्यालय, राँची**
**जुलाई–2023**


**शोध निर्देशक :**

**डॉ0 जितेन्द्र शुक्ला**
वरिष्ठ सहायक प्राध्यापक
स्नातकोत्तर भूगोल विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची

**शोधकर्त्ता :**

**श्रीकान्त कुमार,**
एम0ए0,यू0जी0सी0 नेट
मो0 : 8789766964
E-mail ID :srikantkumar4@gmail.com

**शोध शीर्षक :— देवघर जिला में अनुसूचित जाति जनसंख्या के आयाम : एक भौगोलिक विश्लेषण**

## 1. शोध शीर्षक का संक्षिप्त परिचय :—

भारत के संविधान के अनुच्छेद 366 (24) ''**अनुसूचित जातियों**'' से ऐसी जातियाँ, मूलवंश या जनजातियाँ अथवा ऐसी जातियों, मूलवंशों या जनजातियों के भाग या उनमें के यूथ अभिप्रेत है, जिन्हें इस संविधान के प्रयोजनों के लिए अनुच्छेद 341 के अधीन अनुसूचित जातियाँ समझा जाता है।

भारत के संविधान के अनुच्छेद 341 अनुसूचित जातियाँ (1) राष्ट्रपति {किसी राज्य} {या संघ राज्यक्षेत्र} के संबंध में और जहाँ वह राज्य है, वहाँ उसके राज्यपाल से परामर्श करने के पश्चात लोक अधिसूचना द्वारा, उन जातियों, मूलवंशों या जनजातियों, अथवा जातियों, मूलवंशों या जनजातियों, के भागों या उनमें के यूथों को विनिर्दिष्ट कर सकेगा, जिन्हें इस संविधान के प्रयोजनों के लिए {यथास्थिति} उस राज्य {या संघ या राज्यक्षेत्र} के संबंध में अनुसूचित जातियाँ समझा जायेगा।

अनुच्छेद 341 (2) संसद, विधि द्वारा किसी जाति, मूलवंश या जनजाति को अथवा जाति, मूलवंश या जनजाति के भाग या उनमें के यूथ को खण्ड (1) के अधीन निकाली गई अधिसूचना में विनिर्दिष्ट अनुसूचित जातियों की सूची में सम्मिलित कर सकेगी या उसमें से अपवर्जित कर सकेगी, किन्तु जैसा ऊपर कहा गया है उसके सिवाय उक्त खंड के अधीन निकाली गई अधिसूचना में किसी पश्चातवर्ती अधिसूचना द्वारा परिवर्तन नहीं किया जायेगा।

प्रस्तुत शोध शीर्षक देवघर जिला में अनुसूचित जाति जनसंख्या के विभिन्न आयामों का एक भौगोलिक विश्लेषण है। वास्तव में देवघर जिला झारखण्ड राज्य स्थित विख्यात द्वादश ज्योंर्तिलिंगों में प्रसिद्ध है तथा राज्य का प्रसिद्ध धार्मिक तीर्थ एवं पर्यटक स्थल है, जहाँ सदियों से विभिन्न हिन्दू धर्मावलंबियों का बसाव होते रहे हैं। अनुसूचित

जातियाँ हिन्दू समाज के सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से हीन जाति समूह को प्रदर्शित करती हैं। इसमें से अधिकांश श्रमिक, छोटे किसान, दस्तकार तथा सामाजिक सेवक हैं। इनके भौगोलिक वितरण से क्षेत्र में गरीबी के परिमाण का अंदाजा लगाया जा सकता है। अनुसूचित जाति एक विषम जातिय समूह है, जिसमें 542 जातियाँ सम्मिलित हैं। सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टि से कमजोर तबके की जनसंख्या के विभिन्न आयामों का अध्ययन वास्तव में उनके सामाजिक उत्थान एवं विकास के लिए आवश्यक है।

## 2. अद्यतन स्थिति :–

भारत में स्वतंत्रता के समय अनुसूचित जातियों की जनसंख्या 5.17 करोड़ थी जो 1981 में बढ़कर 10.47 करोड़ और 2011 में 20.14 करोड़ (कुल जनसंख्या का 16.63%) हो गया। इस प्रकार पिछले 60 वर्षों में इनकी जनसंख्या में तीन गुणा से भी अधिक वृद्धि हुई है। झारखण्ड राज्य के विभिन्न जिलों में अनुसूचित जाति के विभिन्न वर्गों की जनसंख्या का अच्छा वितरण मिलता है। देवघर जिला में अनुसूचित जाति के विभिन्न समूहों में मुख्य रूप से बंतर, ओझा, चमार, मोची, धोबी (रजक), डोम, दुसाध, फारसी, हलालखोर मेहतर, स्वांसी, पासी, रजवार, मूसहर एवं तूरी सम्मिलित हैं। इन सभी जातियों को स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् संवधािन के अनुच्छेद के अन्तर्गत अधिसूचित कर विशेष कोटि के अन्तर्गत रखा गया है, ताकि समाज के इन सामाजिक–आर्थिक रूप से पिछड़े लोगों का उत्थान किया जा सके। देवघर जिला में अनुसूचित जाति के अद्यतन स्थिति को निम्नवत् रेखांकित किया जा सकता है।

देवघर जिला की कुल जनसंख्या 1492073 (775022 पुरूष, 717051 महिला) जिसमें अनुसूचित जाति की कुल जनसंख्या 190036 है, जिसमें 98295 पुरूष एवं 91741 महिला जनसंख्या है। कुल जनसंख्या में अनुसूचित जाति की जनसंख्या 12.73% है, जिसमें 12.67 % पुरूष तथा 12.79 % महिला जनसंख्या है। (जनगणना 2011)

- देवघर जिला में अनुसूचित जाति की जनसंख्या में निरंतर वृद्धि होती रही है। जनगणना वर्ष 1951 में यहाँ अनुसूचित जाति की कुल जनसंख्या 35,963 थी।

- देवघर जिला में अनुसूचित जाति समुदाय की जनसंख्या का असमान वितरण पाया जाता है। जिला में 02 अनुमंडल (01) देवघर अनुमंडल में कुल अनुसूचित जाति जनसंख्या 112074 जिसमें 58264 पुरूष तथा 53810 महिला जनसंख्या है। (02) मघुपुर अनुमंडल में कुल अनुसूचित जाति जनसंख्या 77962 है, जिसमें 40031 पुरूष तथा 37931 महिला जनसंख्या है। इसी प्रकार देवघर सामुदायिक विकास प्रखण्ड में कुल अनुसूचित जाति जनसंख्या 26535 (13739 पुरूष, 12796 महिला) देवीपुर सामुदायिक विकास प्रखण्ड कुल अनुसूचित जाति जनसंख्या 14290 (7390 पुरूष, 6900 महिला) सरवन सामुदायिक विकास प्रखण्ड कुल अनुसूचित जाति जनसंख्या 14932 (7776 पुरूष, 7156 महिला) सोनाराय तरही सामुदायिक विकास प्रखण्ड कुल अनुसूचित जाति जनसंख्या 7291 (3796 पुरूष, 3495 महिला), मोहनपुर सामुदायिक विकास प्रखण्ड कुल अनुसूचित जाति जनसंख्या 23976 (12357 पुरूष, 11619 महिला), मधुपुर सामुदायिक विकास प्रखण्ड कुल अनुसूचित जाति जनसंख्या 20671 (10741 पुरूष, 9930 महिला), कौरों सामुदायिक विकास प्रखण्ड कुल अनुसूचित जाति जनसंख्या 11017 (5621 पुरूष 5396 महिला) मारगोमुण्डा सामुदायिक विकास प्रखण्ड कुल अनुसूचित जाति जनसंख्या 3221 (1627 पुरूष, 1594 महिला), सारठ सामुदायिक विकास प्रखण्ड कुल अनुसूचित जाति जनसंख्या 25366 (13049 पुरूष 12317 महिला), पालोजोरी सामुदायिक विकास प्रखण्ड कुल अनुसूचित जाति जनसंख्या 11778 (5954 पुरूष, 5824 महिला) नगर निगम देवघर कुल अनुसूचित जाति जनसंख्या 25050 (13206 पुरूष, 11844 महिला), नगर परिषद् मधुपुर कुल अनुसूचित जाति जनसंख्या 5909 (3029 पुरूष 2870 महिला) है।
- जिला में जनसंख्या के आयामों में, अनुसूचित जाति जनसंख्या के विभिन्न आयाम, साक्षरता दर एवं लिंगानुपात प्रमुख है। जिला में साक्षरता दर 66.41 % है जिसमें

पुरूष साक्षरता दर 76.84 % तथा महिला साक्षरता दर 55.42 % है। इसमें अनुसूचित जाति जनसंख्या में कुल साक्षरता दर 55.69 % जिसमें 65.10 % पुरूष तथा 35.6 % महिला साक्षरता दर है। यह बहुत निम्न स्तर की साक्षरता दर है। इसी प्रकार जिला में लिंगानुपात 925 है, जबकि झारखण्ड राज्य में 949 है।

- जिला में अनुसूचित जाति जनसंख्या के ग्रामीण एवं नगरीय संख्या में बहुत अधिक अंतर मिलता है। अनुसूचित जाति की जनसंख्या जिला में सबसे अधिक ग्रामीण क्षेत्रों में रहती हैं। कुल जनसंख्या 190036 (जनगणना 2011) में से 159099 ग्रामीण एवं 30937 नगरीय है। अनुसूचित जाति की ग्रामीण जनसंख्या में 82070 पुरूष एवं 77029 महिला जनसंख्या है। जबकि 30957 शहरी जनसंख्या में 16243 पुरूष तथा 14714 महिला जनसंख्या है।
- देवघर जिला में सामान्य एवं अनुसूचित जाति की जनसंख्या की सामाजिक एवं आर्थिक स्तर में काफी भिन्नता मिलती है। यद्यपि कि स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था में अनुसूचित जाति की सामाजिक एवं आर्थिक स्तर में व्यापक परिवर्तन आया है। अस्पृश्यता, बाल मजदूरी एवं दलित भावना में काफी परिवर्तन हुआ है। समान अवसर की समानता तथा सरकार की कल्याणकारी योजनाओं में विशेष लाभ के फलस्वरूप अनुसूचित जाति जनसंख्या की सामाजिक स्तर में काफी विकास हुआ है।

  सरकार की कल्याणकारी योजनाओं यथा गरीबी उन्मूलन, अन्त्योदय योजना, स्वास्थ्य योजना, आवास एवं अन्य सभी योजनाओं का सीधा लाभ अनुसूचित जाति के जनसंख्या को मिल रहा है। इससे इसके आर्थिक स्तर में निरंतर विकास हुआ है।
- अनुसूचित जाति की जनसंख्या संबंधी अन्य आयामों यथा जन्मदर एवं मृत्युदर, प्रव्रजन, महिला सशक्तिकरण, निर्धनता, अशिक्षा, ऋण ग्रस्तता, रहन–सहन का निम्न स्तर, आवासीय समस्या, शोषण की समस्या, बेरोजगारी की समस्या, स्वास्थ्य आदि प्रमुख है।

3. **अनुसंधान की जाने वाली समस्या :–**

- देवघर जिला में अनुसूचित जाति की जनसंख्या की विभिन्न आयामों में जनसंख्या वृद्धि, वितरण, धनत्व, लिंगानुपात, साक्षरता, कार्यशील जनसंख्या, प्रव्रजन की क्या स्थिति हैं?
- देवघर जिला में अनुसूचित जाति जनसंख्या की आर्थिक एवं सामाजिक विकास का स्तर क्या हैं?
- जिला में अनुसूचित जाति जनसंख्या का ग्रामीण एवं नगरीय संरचना में क्यों अंतर मिलता है?
- अनुसूचित जाति जनसंख्या समुदाय के विभिन्न वर्गों में जनसंख्या संबंधी विभिन्न आयामों में क्या अंतर व्याप्त हैं?
- स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् अनुसूचित जाति जनसंख्या के उत्थान के लिए कौन–कौन सी कल्याणकारी योजनाएँ चलाई गई हैं। इन कल्याणकारी योजनाओं का इनके जीवन स्तर पर क्या प्रभाव पड़ा हैं?
- अनुसूचित जाति जनसंख्या में क्या समस्याएँ हैं? इनके उत्थान के लिए कौन सी योजनाएँ चलाई जा रही है?

**शोध क्षेत्र** :– देवघर, झारखण्ड राज्य में संथाल परगना प्रमण्डल स्थित एक जिला है। इसकी समुद्रतल से औसत ऊँचाई 517 मी0 है। जिला का कुल क्षेत्रफल 2629.96 वर्ग कि0 मी0 है। इसका अक्षांशीय एवं देशांतरीय विस्तार $24^0 29'$ से $24^0 48'$ उत्तरी आक्षांश एवं $86^0 42'$ से $86^0 7'$ पूर्वी देशांतर के मध्य है। जिला में 02 अनुमंडल, 10 विकास खण्ड 01 नगर निगम, 01 नगर परिषद्, 25 जिला बोर्ड, 246 पंचायत समिति, 10 अंचल एवं 88 हल्का है। जिला में 194 पंचायत, 2663 राजस्व ग्राम तथा 311 बेचिरागी ग्राम है।

# अवस्थिति मानचित्र

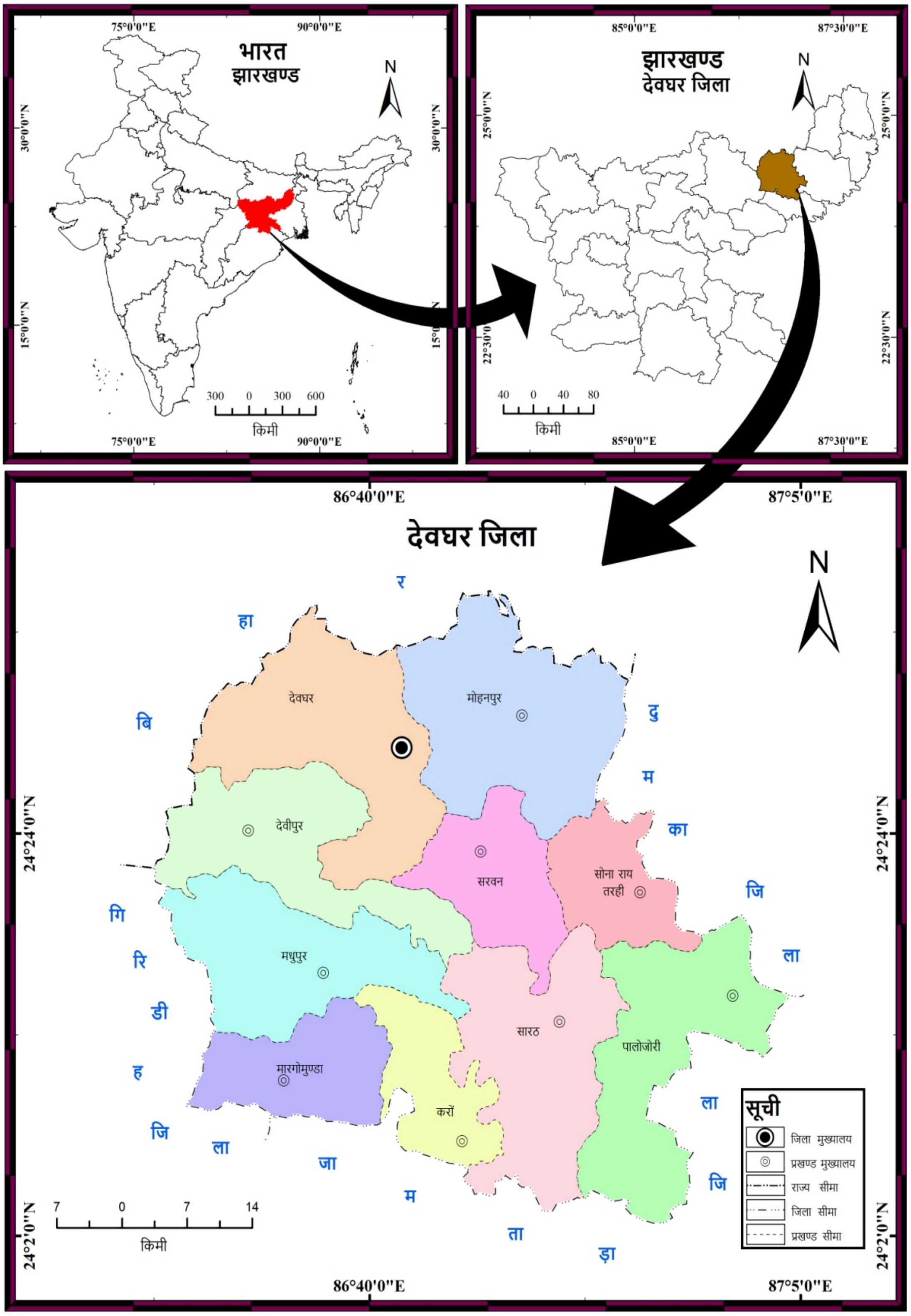


श्रोत: भारतीय सर्वेक्षण विभाग (टोपोशीट्स: 72L/7,8,10,11,12,14,15,16 एवं 72P/3,4), 2010 एवं जिला जनगणना पुस्तिका भाग-ब, 2011

## 4. अनुसंधान का उद्देश्य एवं उत्प्रेरणा :–

प्रस्तुत शोध के निम्न उद्देश्य एवं उत्प्रेरणा हैं।

**उद्देश्य :–**

- देवघर जिला में अनुसूचित जाति जनसंख्या के स्थानिक घटकों यथा प्रखण्डवार वितरण, घनत्व तथा विभिन्न जनगणना वर्षों में इनकी जनसंख्या में वृद्धि का विश्लेषण करना।
- जिला में अनुसूचित जाति जनसंख्या की संरचनात्मक घटकों यथा जनसंख्या वृद्धि लिंगानुपात, आयु संरचना, आर्थिक संरचना एवं कार्यशील संरचना, आदि का विश्लेषण करना।
- देवघर में अनुसूचित जाति जनसंख्या में साक्षरता की स्थिति का विश्लेषण करना। साक्षरता वास्तव में विकास यथा सामाजिक एवं आर्थिक विकास की स्थिति का द्योतक है।
- देवघर जिला में अनुसूचित जाति जनसंख्या के सामाजिक एवं आर्थिक विकास का मूल्यांकन करना। सांविधानिक प्रावधानों के अनुसार अनुसूचित जाति जनसंख्या निम्न स्तर के समुदाय हैं। अतः इन समुदायों को समाज में अन्य तबकों के समान स्तर पर लाने के लिए उनको अधिसूचित किया गया है। अनुसूचित जाति जनसंख्या के सामाजिक एवं आर्थिक घटकों के मूल्यांकन से इनके विकास का मार्ग प्रशस्त किया जा सकता है।
- जिला में अनुसूचित जाति जनसंख्या के विकास के लिए कल्याणकारी विकास योजनाएँ कार्यान्वित की गई है एवं कई योजनाएँ वर्तमान में कार्यान्वित है। अतः इन कल्याणकारी योजनाओं का विकास में क्या योगदान रही है। इससे इनका कितना विकास हुआ है?
- जनसंख्या संबंधी विभिन्न आयामों तथा कल्याणकारी योजनाओं के मूल्यांकन के पश्चात् इसकी समस्याओं का मूल्यांकन कर भविष्यगत विकास की योजनाओं का मार्ग प्रशस्त करना, इस शोध का मुख्य उद्देश्य है।

**उत्प्रेरणा**

- जिला में अनुसूचित जाति जनसंख्या के विभिन्न आयामों में काफी विचलन मिलता है। वर्तमान समय तक इनका सामाजिक आर्थिक विकास का स्तर काफी निम्न है।
- अनुसूचित जाति जनसंख्या में जन्मदर, मृत्युदर, प्रव्रजन, कुपोषण तथा कार्यशीलता में अत्यधिक सामाजिक कमी है। यह स्थिति वर्तमान शोध का प्रभावकारी उत्प्रेरक है।
- जिला में अनुसूचित जाति जनसंख्या की ग्रामीण एवं नगरीय जनसंख्या में काफी अंतर मिलता है। ग्रामीण जनसंख्या की जनांकिकीय घटकों में व्यापक विषमता है। इन विषमताओं को प्रशासनिक पटल पर स्थापित करना महत्वपूर्ण उत्प्रेरक है।
- केन्द्र एवं राज्य सरकार द्वारा अनुसूचित जाति के लिए अनेक कल्याणकारी योजनाओं के कार्यान्वयन के पश्चात् भी यथोचित विकास नहीं हुआ, जो इस शोध का प्रमुख उत्प्रेरक है।
- अनुसूचित जाति जनसंख्या के विभिन्न आयामों के विश्लेषण के पश्चात् विकास के योजनाओं का सुझाव महत्वपूर्ण उत्प्रेरक है।

**परिकल्पनाएँ :–**

- देवघर जिला की अनुसूचित जाति जनसंख्या संरचना में विषमताएँ व्याप्त है।
- जिला की अनुसूचित जाति जनसंख्या की ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्रों में सामााजिक एवं आर्थिक विकास की स्थिति विषम हैं।
- केन्द्र एवं राज्य प्रायोजित विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं के क्रियान्वयन से अपेक्षित विकास नहीं हुआ है।

## 6. अनुसंधान की रूपरेखा (अभिकल्प) तथा पद्वतिः–

यह अभिकल्प योजना, शोध की सम्पूर्ण रूपरेखा या कार्यक्रम है। इसके अन्तर्गत प्रत्येक वस्तु की रूपरेखा सम्मिलित होती हैं, जो शोधकर्त्ता प्राक्कल्पनाओं से लेकर आँकड़ों के अंतिम विश्लेषण तक करता है। वास्तव में यह शोध का ब्लूप्रिंट होता है। ''उचित एवं सटीक निष्कर्षों तक पहुँचने के लिए शोध प्रक्रिया का पूर्व नियोजन की प्रक्रिया को शोध अभिकल्प कहते हैं''।

प्रस्तुत शोध के निम्न अभिकल्प हैं—

**संभावित अध्याय**

परिचय।

**प्रथम अध्याय** : भौगोलिक पृष्ठभूमि।

**द्वितीय अध्याय** : अनुसूचित जाति जनसंख्या की वृद्धि, वितरण एवं धनत्व।

**तृतीय अध्याय** : जनसंख्या संरचना :— जनांकिकी, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, ग्रामीण एवं नगरीय संरचना।

**चतुर्थ अध्याय** : अनुसूचित जाति जनसंख्या संयोजन प्रतिरूप।

**पंचम् अध्याय** : अनुसूचित जाति के लिए संचालित कल्याणकारी योजनाएँ एवं विकास की स्थिति।

**षष्ठ अध्याय** : अनुसूचित जाति की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का मूल्यांकन।

**सप्तम् अध्याय** : अनुसूचित जाति जनसंख्या की समस्याएँ एवं विकास हेतु नियोजन।

निष्कर्ष।

संबंधित संदर्भ।

परिशिष्ट।

प्रस्तुत शोध मात्रात्मक, विवरणात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रकार है। देवघर जिला में अनुसूचित जाति जनसंख्या के विभिन्न आयामों को 02 अनुमंडल तथा 10 प्रखण्ड विकास खण्ड के स्तर पर किया जायेगा। ग्रामीण स्तर पर सामाजिक एवं आर्थिक विकास के लिए प्रत्येक प्रखण्ड से 10 राजस्व ग्रामों को चयनित करके निष्कर्ष निकाले जायेंगे।

जनसंख्या वितरण एवं घनत्व तथा संरचना की व्याख्या एवं विश्लेषण सांख्यिकीय विधि द्वारा की जायेगी। सामाजिक एवं आर्थिक विकास के स्तर की माप सांख्यिकी विधि प्राप्त प्रतिफल के आधार पर सम्पादित की जायेगी।

विभिन्न सांख्यिकीय आँकड़ों को रेखाचित्रों, मानारेखों एवं स्थानिक मानचित्रों के द्वारा प्रस्तुत की जायेगी।

## 7. आँकड़ों के स्रोत तथा आँकड़ा संग्रह में उपयोग किये जाने वाले उपकरण

प्रस्तुत शोध द्वितीयक स्रोत से प्राप्त आँकड़ों पर आधारित होगा। आवश्यकतानुसार प्राथमिक स्रोत से भी क्षेत्र सर्वेक्षण द्वारा आँकड़ों का संग्रहण किया जायेगा।

द्वितीयक आँकड़ों के प्राप्ति के निम्नवत् स्रोत होंगे–

- भारतीय जनगणना निदेशालय द्वारा विभिन्न जनगणना वर्षों में की गई जनगणना प्रतिवेदन से प्राप्त आँकड़े।
- झारखण्ड राज्य आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेशालय, राँची।
- देवघर जिला के 10 विकास खण्डों में जनसंख्या से संबंधित संकलित किये गये आँकड़े।
- राष्ट्रीय जनसंख्या रजिस्टर (एन0पी0आर0)।
- प्रतिदर्श निबंधन पद्धति।
- राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वे ।
- राष्ट्रीय पहचान पत्र निदेशालय, शाखा, देवघर।
- झारखण्ड अनुसूचित जाति आयोग, राँची।
- देवघर जिला में अनुसूचित जाति विकास में संलग्न स्वैच्छिक संस्था।

**आँकड़ों की प्राप्ति हेतु निम्न उपकरण उपयुक्त हैं–**

- भौगोलिक सूचना प्रणाली।
- झारखण्ड राज्य स्थानीय दत्त, आँकड़ा अनुप्रयुक्त केन्द्र, राँची।
- एस0पी0एस0एस0 (Statistical Package for Social Scientists) इसका उपयोग आँकड़ों के विश्लेषण हेतु किया जायेगा।
- आर्क जी0आई0एस0 इस उपकरण का उपयोग आँकड़ों के विश्लेषण तथा मानचित्रण हेतु किया जायेगा।
- क्षेत्र सर्वेक्षण विधि।

**8. आँकड़ा विश्लेषण :–**

जनसंख्या संबंधी आँकड़ों का विश्लेषण जनानांकीय पद्वति या ग्राफीय (रेखा चित्र विधि) जनसंख्या पिरामिड, ग्राहक, समूह विश्लेषण, आयु एवं लिंग पिरामिड, निर्भरता अनुपात, स्त्री–पुरूष अनुपात आयु संरचना, प्रजननता एवं मर्त्यता, धनत्व, वृद्धि दर, जनसंख्या की आर्थिक संरचना आदि। ये सभी जनांकिकीय आँकड़ों की विश्लेषण विधियाँ है, जिनका उपयोग प्रस्तुत शोध में अनुसूचित जाति जनसंख्या के विभिन्न आयामों के विश्लेषण हेतु प्रयुक्त किया जायेगा।

इसके लिए सामाजिक–आर्थिक एवं विकास के स्तर के लिए प्रमुख घटक विश्लेषण (Principal Component Method) जीवन की गुणवत्ता विश्लेषण के अतिरिक्त अन्य सांख्यिकीय विधियों का उपयोग कर विश्लेषण किया जायेगा।

**9. अध्ययन का महत्त्व**

प्रस्तुत शोध के निम्न महत्त्व हैं :–

- देवघर जिला की अनुसूचित जाति जनसंख्या के आयामों को प्रस्फूटित करना।
- अनुसूचित जाति जनसंख्या की समस्याओं को स्पष्ट करना।
- अनुसूचित जाति जनसंख्या में निमित्त जनगणना वर्षों में आये बदलाव को दृश्यमान करना।

- अनुसूचित जाति जनसंख्या के सामाजिक आर्थिक घटकों का मूल्यांकन कर व्याप्त समस्याओं के प्रति जागरूकता लाना तथा समाधान का मार्ग प्रशस्त करना।
- अनुसूचित जाति में जनसंख्या के विभिन्न वर्गों में व्याप्त समस्याओं के प्रति लोगों में संवेदनशीलता लाना।
- अनुसूचित जाति जनसंख्या में व्याप्त सामाजिक कुरितियों को उद्‌घाटिक कर विकास का मार्ग प्रशस्त करना।
- विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर विकास हेतु नियोजन प्रस्तुत करना।

**10. वर्त्तमान समय में इसकी प्रासंगिकता एवं सामाजिक उपादेयता :–**

अनुसूचित जाति समाज के वंचित वर्ग है। देवघर जिला के संदर्भ में स्पष्ट होता है कि यहाँ के अनुसूचित जाति जनसंख्या की कई समस्या यथा लिंगानुपात, साक्षरता दर, व्यावसायिक संरचना, कार्यशील जनसंख्या, मर्त्यता, प्रजननता, कुपोषण आदि घटकों में काफी विषमता हैं– ऐसी स्थिति में वर्तमान शोध की वास्तविकता इनकी समस्याओं को पटल पर उपस्थापित कर निदान का मार्ग प्रशस्त करना अति प्रासंगिक एवं समीचीन है। प्रस्तुत शोध इनकी समस्याओं का निदान कर विकास का मार्ग प्रस्तुत करने में सफल हो सकता है। इस दृष्टिकोण से वर्त्तमान संदर्भ में यह शोध अति प्रासंगिक है।

अनुसूचित जाति समुदाय समाज का उपेक्षित वर्ग रहा हैं, दलित समुदाय में कई प्रकार की समस्याएँ व्याप्त है। अतः प्रस्तुत शोध सामाजिक उत्थान के दृष्टिकोण से अति महत्वपूर्ण है। प्रस्तुत शोध की अत्यधिक सामाजिक उपादेयता सिद्ध हो सकती है।

**11. वर्त्तमान ज्ञान में योगदान :–**

साइमन कमीशन ने सर्वप्रथम समाज के वंचित वर्गों के लिए अनुसूचित जाति शब्द का प्रयोग किया था। इसके लिए 'अस्पृश्यता' शब्द का प्रयोग भी करते हैं। वास्तव में जनसंख्या के विभिन्न पक्षों के संदर्भ में सांस्कृतिक विकास भूगोल के अन्य शाखाओं के पश्चात् है। जनसंख्या भूगोल के अन्य तथ्यों में अनुसूचित जाति जनसंख्या का अध्ययन भी एक महत्वपूर्ण पक्ष है। जनसंख्या भूगोल के इस पक्ष के विकास में एस0पी0 चटर्जी (1964), आई0 सी0 एस0 एस0 आर0 (1972 एवं 1979), एन0 के0 बी0 रेडी (1976) एवं आर0 एस0 सिंह (1980) का योगदान काफी महत्वपूर्ण रहा है।

अनुसूचित जाति जनसंख्या पर 1960 से पूर्व किये गए कार्यों में ए0 रोड्स (1941–42), एस0 पी0 चटर्जी एवं वी0 एन0 गांगूली (1949), एस0 सी0 बोस (1946–1951) एवं आर0 एन0 सिंह (1954–1956) अन्य योगदान कर्त्ताओं में एस0 कायस्थ (1916) एल0 आर0 सिंह (1956) एन यू0 सिंह (1956) प्रमुख है।

अनुसूचित जाति जनसंख्या के विभिन्न पक्षों पर ज्ञान में योगदान देने वालों में ब्यूरोजीव–गार्नियर जे0 है, इनकी पुस्तक जनसंख्या में अनुसूचित जाति के विभिन्न पक्षों के अध्ययन का उल्लेख है।

आर0 सी0 चान्दना जिन्होंने जी0 एस0 गोसाल (पंजाब विश्वविद्यालय) के निर्देशन में शोधकार्य पूर्ण किया। इनका शोध कार्य चेंजेज इन द केरेक्टीटीस्टीक ऑफ पॉपुलेशन इन रोहतक एण्ड गुड़गाँव जिला (1951–61) महत्वपूर्ण है। इसमें उन्होंने अनुसूचित जाति जनसंख्या का उल्लेख किया है। बाद के वर्षों में उन्होंने जनसंख्या भूगोल के विभिन्न पक्षों में एम0 एस0 सिद्धू के साथ उल्लेख रचनाएँ की हैं।

जे0 आई0 क्लार्क, 1965 में जनसंख्या भूगोल पर पुस्तक लिखी है। वे अंतर्राष्ट्रीय भौगोलिक संघ के जनसंख्या आयोग के अध्यक्ष के रूप में जनसंख्या भूगोल के विभिन्न पक्षों पर कई पुस्तकें तथा आर्टिकल लिखे हैं।

डॉ0 जॉर्ज, डेमकों (1970) ने किसी क्षेत्र की जनसंख्या के विभिन्न पक्षों के सांख्यिकी विश्लेषण के तरीकों पर पुस्तक लिखें। जनसंख्या भूगोल के विभिन्न पक्षों एवं अनुसूचित जाति के संदर्भ में जी0 टी0 ट्रीवार्था (1935) की पुस्तक 'ए ज्योग्राफी ऑफ पोपुलेशन : वर्ल्ड पेटर्नस काफी महत्वपूर्ण है। राबर्ट वूड्स (1976) की रचना पॉपूलेरेशन एनालिसिस इन ज्योग्राफी तथा वील्बर जेलिस्कीं (1966) की पुस्तक मॉवीलिटी ट्रांजीसन मॉडल काफी उल्लेखनीय है।

झारखण्ड राज्य के विभिन्न विश्वविद्यालय में इस शीर्षक पर शोध कार्य की कमी है। प्रस्तुत शोध कार्य इस क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण योगदान होगा।

**12. भविष्यगत कार्य :–**

प्रस्तावित शोध की पूर्णता से अनुप्रयुक्त जनसंख्या भूगोल के नये आयाम खुलेंगे तथा इस पर आधारित अन्य पक्षों पर अध्ययन एवं शोध के मार्ग प्रस्तुत होंगे– इस शोध पर आधारित भविष्यगत कार्य निम्नवत रेखांकित हैं–

(1) अनुसूचित जाति जनसंख्या वृद्धि एवं बेरोजगारी।

(2) अनुसूचित जातियों में निर्धनता का स्तर।

(3) अनुसूचित जातियों हेतु कल्याणकारी योजनाओं की स्थिति।

(4) अनुसूचित जातियों में भूमिहीनता।

(5) अनुसूचित जातियों में गरीबी एवं प्रव्रजन।

(6) अनुसूचित जातियों में पर्यावरण प्रबंधन एवं बोध।

(7) अनुसूचित जाति एवं अस्पृश्यता।

(8) देवघर जिला में अनुसूचित जाति जनसंख्या के सामाजिक आर्थिक विकास का स्तर।

(9) अनुसूचित जाति में कार्यशील जनसंख्या।

(10) देवघर जिला में अनुसूचित जाति में महिला साक्षरता एवं कार्यात्मकता।

**13. संबंधित संदर्भ ग्रंथ सूची :–**

1. चान्दना, आर0सी0 (1970) : चेंजेज इन द डेमोग्राफी केरेक्टेटीटिक्स ऑफ रोहतक और गुड़गाँव जिला, 1951–61 : ए ज्योग्राफी इन ज्योग्राफीक्स एनालिसीस, पंजाब विश्वविद्यालय, पंजाब।

2. चान्दना, आर0सी0 (2006), ए ज्योग्राफी ऑफ पॉपूलेसन : कॉनसेप्ट डिटमिनेट्स एण्ड पेंटर्नस, कल्याणी पब्लिशर्स, नई दिल्ली।

3. चान्दना, आर0सी0 एण्ड सिंह, एम0 एस0 (1980) इन्ट्रोडक्शन टू पोपूलेशन ज्योग्राफी, कल्याणी पब्लिशर्स, नई दिल्ली।

4. क्लार्क, जॉन, आई (1965) : पोपूलेशन ज्योग्राफी पेर्गमोन प्रेस, न्यूयोर्क।

5. डेमको, जी0एल0 (1970) : पोपूलेशन ज्योग्राफी, ए रीडर, मेकग्रो–हील, न्यूयोर्क।

6. गोसल, जी0एस0, (1956) : ए ज्योग्राफीकल एनालीलीस ऑफ इंडियाज पोपूलेशन, यूनिवर्सिटी ऑफ विसकौसिन

7. स्मिता (1995) : डेमोग्राफी डायनेजियम इन इंडिया, डिसकॉभरी पॉलीसिंग हॉउस, नई दिल्ली

8. ट्रोवार्था, जी0टी0 (1969) : ज्योग्राफी ऑफ पोपूलेशन वर्ल्ड पैटर्नस, जॉन बिले, न्यूयोर्क।

9. वूड्स रॉबर्ट (1979) : पोपूलेशन एनालिलीस इन ज्योग्राफी, लॉगमैंन, लंदन

10. मौर्य, एस0डी0 (1988) : पॉपूलेशन एण्ड हाउसिंग प्रोबलेम, चूग पब्लिकेशन इलाहाबाद

11. मौर्या, एस0डी0 (2008) : ट्रेंड्स ऑफ अरबानाईजेशन एण्ड सोशल चेंज, नेशनल ज्योग्राफर्स, 2008, वॉल–43, 205, 204

12. यू0एन0डी0पी0, ह्यूमन डेभवलपमेंट रिपोर्ट 2007 / 2008

13. अंबरीश गौतम (2021) : पाराडिगम सिफ्ट एमंग शिड्यूल्ड कास्ट इन झारखण्ड : एक स्टडी ऑफ गढ़वा डिस्ट्रीक्ट

14. पार्वथका सी0 (1981) : दे वीकर सेक्शन ऑफ सोसाईटी द शिड्यूल कास्ट इन इंडिया, सोसियोलॉजिकल बूलेटीन 30 (1) 54–77

15. नंदूराम (1988) : द मोबाइल शिड्यूल कास्ट, राइज ऑफ न्यू मिडिल क्लास, हिन्दुस्तान पब्लिशिंग कोरपोरेशन, नई दिल्ली

16. धूरे, जी0एस0 (1961) 5 कास्ट, क्लास एण्ड ऑक्यूपेशन, पोपूलर बुक बॉम्बे, 1–5

17. रविन्द्र कुमार (2002) : इम्पेक्ट ऑफ रूरल डवलपमेंट ऑन शिड्यूल कास्ट, अनमोल पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 247

18. सिंह, श्रवण कुमार (2011) : सोशल सिनेरियो ऑफ शिड्यूल कास्ट इन झारखण्ड, थर्ड वर्ल्ड कॉनसेप्ट

19. आनंद टेलटूम्बे (2003) : 'ग्लोबेलाईजेशन एण्ड इडुकेशन, फोर दालितस : ए पर्सपेम्टीव फॉर द फ्यूचर' इन ग्लोबलाईजेशन एण्ड सोशल मूभमेंट : स्ट्रगल फोर हयूमैन सोसाईटी, रावत प्रकाशन, नई दिल्ली

20. जनगणना प्रतिवेदन : 1951, 61, 71, 81, 91, 2001 एवं 2011, भारतीय गणगनणा निदेशालय, भारत एवं झारखण्ड

21. http://ncse.nic.is/files/ncse/202 pdf.